STUDY IQ PUBLICATIONS

NCERT सरलीकृत सीरीज़

- मूल अवधारणाओं पर विशेष फोकस
- सारगर्भित और स्पष्ट भाषा
- विषयवार वर्गीकरण
- नई एनसीईआरटी से अपडेटेड कंटेंट
- मूल्यांकन के लिए अभ्यास प्रश्न

इतिहास

सारांश नोट्स

कक्षा 6-12

यूपीएससी और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

प्रस्तावना

प्रिय अभ्यर्थियों,

"NCERT सरलीकृत (NCERT Simplified)" पुस्तक श्रृंखला में आपका स्वागत है, यह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की पाठ्यपुस्तकों का संक्षिप्त और स्पष्ट अवलोकन प्रदान करने के लिए डिजाइन की गयी एक व्यापक मार्गदर्शिका है। यह पुस्तक यूपीएससी, एसएससी और अन्य सभी सरकारी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार की गई है। StudyIQ द्वारा प्रकाशित, इस पुस्तक का उद्देश्य अत्यधिक विस्तृत एनसीईआरटी पाठ्यक्रम को सरल बनाना और आपको अपनी परीक्षा में सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान से समृद्ध करना है।

प्रतियोगी परीक्षाओं के क्षेत्र में, एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों को विभिन्न विषयों की गहन समझ के लिए एक नींव के रूप में माना जाता है। इन पुस्तकों की सुस्पष्ट पाठ्य सामग्री और सटीकता पर शिक्षकों और छात्रों दोनों द्वारा समान रूप से भरोसा किया जाता है। हालाँकि, इसके विस्तृत पाठ्यक्रम के कारण, अभ्यर्थियों के लिए पुस्तक में दिए हुए हर विवरण को कवर करना या पढ़ना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए, "NCERT सरलीकृत" को आपकी तैयारी को कारगर बनाने और सफलता की संभावनाओं को अधिकतम करने के लिए एक आदर्श सहयोगी के रूप में तैयार किया गया है।

इस पुस्तिका श्रृंखला को रणनीतिक रूप से 2 भागों में विभाजित किया गया है; शुरुआत में केन्द्रीय तथ्य सार एवं सिद्धांत तथा अंत में राज्य विशेष तथ्य सार एवं सिद्धांत। परीक्षा का पाठ्यक्रम व्यापक है, जो सूचनाओं की अधिकता और प्रश्नों की जटिलता के कारण और भी कठिन हो जाता है। ये पुस्तिकाएं विशेष रूप से उन समस्याओं और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई हैं, जिनका सामना अभ्यर्थियों को उनकी प्रारंभिक तैयारी के दौरान करना पड़ता है। यह अभ्यर्थियों से संबंधित आवश्यक मुद्दों को सुलझाने और प्रारम्भिक परीक्षा से पहले उनके अमूल्य समय को बचाने का एक सार्थक प्रयास है।

पुस्तिका की प्रमुख विशेषताएं:

- **सारगर्भित सारांश:** हमने अनावश्यक विवरणों को समाप्त करते हुए मुख्य अवधारणाओं, परिकल्पनाओं और सिद्धांतों को समाहित किया है, ताकि आप आवश्यक ज्ञान में महारत हासिल करने पर ध्यान केंद्रित कर सकें।
- **विषय-वार प्रस्तुति:** पुस्तक को अलग-अलग भागों में विभाजित किया गया है, प्रत्येक एक विशिष्ट विषय के लिए समर्पित है, जैसे इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजव्यवस्था, समाज इत्यादि।
- **सटीक और स्पष्ट भाषा शैली:** हमारा मानना है कि सीखने की प्रक्रिया में भाषा की सटीकता और स्पष्टता महत्वपूर्ण है। इसलिए, पुस्तक की भाषा को सरल एवं सहज रखा गया है, जिससे जटिल अवधारणाओं को समझना आसान हो जाता है। यह लेखन शैली न केवल विषय की त्वरित समीक्षा में सहायता करती है, बल्कि जानकारी के बेहतर उपयोग करने की सुविधा भी प्रदान करती है।
- **अभ्यास प्रश्न:** सारांश के साथ ही, "NCERT सरलीकृत" में आपकी समझ का आकलन करने और आपके सीखने की क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए सोच-समझकर तैयार किये गये अभ्यास प्रश्न शामिल हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं में आपकी सफलता की यात्रा में, "एनसीईआरटी सरलीकृत" आपका विश्वसनीय सहयोगी होने का वादा करता है। हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक आपको अपनी परीक्षाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने और अपने सपनों को साकार करने के लिए आवश्यक ज्ञान, आत्मविश्वास और कौशल के साथ सशक्त बनाएगी।

शुभकामनाओं सहित

टीम Study IQ

विषय सूची

कक्षा – 6: हमारे अतीत ।

1. परिचय: क्या, कहाँ, कैसे और कब? 2

2. आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक 4

3. आरंभिक नगर 8

4. क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें 12

5. राज्य, राजा और एक प्राचीन गणराज्य 15

6. नए प्रश्न और विचार 18

7. राज्य से साम्राज्य 22

8. गांव, शहर और व्यापार 25

9. नए साम्राज्य और राज्य 28

10. इमारतें, चित्र तथा किताबें 32

कक्षा – 7: हमारे अतीत ॥

1. हजार वर्षों के दौरान हुए परिवर्तनों का अनुरेखण 37

2. शासक और राज्य 42

3. दिल्ली: 12वीं से 15वीं शताब्दी 47

4. मुगल (16वीं से 17वीं शताब्दी) 51

5. जनजातियाँ, खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय 54

6. ईश्वर से अनुराग 58

7. क्षेत्रीय संस्कृतियों का निर्माण 64

8. अठारहवीं सदी की राजनीतिक संरचनाएँ 68

कक्षा – 8: हमारे अतीत ।।।

1. परिचय: कैसे, कब और कहाँ 75

2. व्यापार से राज्य तक: कंपनी द्वारा सत्ता की स्थापना 77

3. ग्रामीण क्षेत्रों पर शासन 82

4. आदिवासी, दीकु और स्वर्ण युग की परिकल्पना 86

5. 1857 और उसके बाद के जन विद्रोह 90

6. 'देशी जनता' को सभ्य बनाना एवं राष्ट्र को शिक्षित करना 93

7. महिला, जाति एवं सुधार 96

8. राष्ट्रीय आंदोलन का विकास: 1870–1947 101

कक्षा – 9: समकालीन भारत I

1. फ्रांसीसी क्रांति 110

2. यूरोप में समाजवाद और रूसी क्रांति 118

3. नाजीवाद और हिटलर का उदय 128

4. वन्य समाज और उपनिवेशवाद 137

5. आधुनिक विश्व में चरवाहे 144

कक्षा – 10: समकालीन भारत II

1. यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय 152

2. भारत में राष्ट्रवाद 163

3. एक वैश्विक दुनिया का निर्माण 173

4. औद्योगीकरण का युग 184

5. मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया 191

कक्षा – 11: विश्व इतिहास के कुछ विषय

1. प्रारंभिक समाज 200

2. तीन महाद्वीपों में विस्तृत साम्राज्य 206

3. यायावर/खानाबदोश साम्राज्य (छवउंकपब म्उचपतमे) 212

4. तीन वर्ग (जेम जेतमम व्तकमते) 218

5. बदलती सांस्कृतिक परंपराएँ 225

6. मूल निवासियों को विस्थापित करना 231

7. आधुनिकीकरण के मार्ग 237

कक्षा – 12: भारतीय इतिहास के कुछ विषय- I

1. ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ: हड़प्पा सभ्यता 251

2. राजा, किसान और नगर 257

3. बंधुत्व, जाति तथा वर्ग 263

4. विचारक, विश्वास और इमारतें 269

कक्षा – 12: भारतीय इतिहास के कुछ विषय- II

5. यात्रियों के नजरिये 277

6. भक्ति-सूफी परंपराएं 282

7. एक सामाज्य की राजधानी: विजयनगर 292

8. किसान, जमींदार और राज्य 298

कक्षा - 12: भारतीय इतिहास के कुछ विषय- III

9. उपनिवेशवाद और देहात (ग्रामीण क्षेत्र) 305

10. विद्रोही और ब्रिटिश राज 311

11. महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन 318

12. संविधान का निर्माण 325

प्रतिदर्श पेज

2

आखेट-खाद्य संग्रह से भोजन उत्पादन तक

आरंभिक लोग: वे इधर-उधर क्यों घूमते थे?

- **आखेटक-खाद्य संग्राहक:** बीस लाख साल पहले उपमहाद्वीप में रहने वाले आरंभिक लोगों को आखेटक-खाद्य संग्राहक के रूप में वर्णित किया जाता है।
  - यह नाम उस गतिविधि से आता है जिस तरीके से वे अपना भोजन प्राप्त करते थे, आम तौर पर जानवरों का शिकार करके, वन उपज इकट्ठा करके और मछली या पक्षियों को पकड़कर।
- **एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन:** आखेटक-खाद्य संग्राहक एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते थे क्योंकि:
  - अगर वे लंबे समय तक एक ही स्थान पर ठहरते, तो वे सभी उपलब्ध पौधों और पशु संसाधनों को खा जाते।
  - जानवर लगातार घूमते रहते हैं, चाहे वह छोटे शिकार की खोज में हो या हिरण और जंगली मवेशियों के मामले में घास एवं पत्तियों की तलाश में। इस वजह से इनका शिकार करने वालों को इनकी प्रत्येक हरकत के प्रति सतर्क रहना पड़ता था।
  - पौधे और पेड़ अलग-अलग मौसमों में फल देते हैं। इसलिए, लोग विभिन्न प्रकार के पौधों की तलाश में मौसम-दर-मौसम में घूमते रहे होंगे।
  - कई नदियाँ और झीलें बारहमासी हैं (जिनमें पूरे वर्ष पानी रहता है), अन्य मौसमी हैं। इनके किनारे रहने वाले लोगों को शुष्क मौसम में पानी की तलाश में जाना पड़ता होगा।

हम इन लोगों के बारे में कैसे जानते हैं?

- **उपकरण और उनके उपयोग:** पुरातत्वविदों ने पाया है कि लोगों ने पत्थर, लकड़ी एवं हड्डी के उपकरण बनाए और उनका उपयोग किया, जिनमें से पत्थर के उपकरण सबसे अच्छे स्वरूप में बचे हैं।
  - इनमें से कुछ पत्थर के औजारों का उपयोग **मांस और हड्डी को काटने, छाल** (पेड़ों से) और **खाल** (जानवरों की खाल) निकालने, **फल व जड़ों को काटने के** लिए किया जाता था।
  - शिकार के लिए भाले और तीर बनाने के लिए कुछ को **हड्डी या लकड़ी के हैंडल से** जोड़ा गया होगा।
  - लकड़ी काटने के लिए अन्य उपकरणों का उपयोग किया जाता था, जिसे **जलाऊ लकड़ी** के रूप में उपयोग किया जाता था। लकड़ी का उपयोग झोपड़ियाँ और औजार बनाने में भी किया जाता था।
  - पत्थर के औजारों का उपयोग खाने योग्य जड़ों को इकट्ठा करने के लिए जमीन खोदने और जानवरों की त्वचा से बने कपड़े सिलने के लिए भी किया गया होगा।

रहने के लिए एक जगह का चुनाव

- **पुरास्थल:** पुरास्थल वे स्थान हैं जहां **वस्तुओं** (उपकरण, बर्तन, भवन आदि) **के अवशेष** पाए गए। इन्हें लोगों द्वारा बनाया गया, इस्तेमाल किया गया और फिर **छोड़ दिया गया।**
  - ये पृथ्वी की सतह पर, जमीन के नीचे दबे हुए या कभी-कभी पानी के नीचे भी पाए जा सकते हैं।
  - आखेटक-खाद्य संग्राहक मुख्य रूप से पानी के स्रोतों, जैसे **नदियों और झीलों** के पास रहते थे।
    - **उदाहरण: भीमबैठका** (वर्तमान मध्य प्रदेश में)। यह गुफाओं और शैलाश्रयों वाला एक पुराना स्थल है। लोगों ने इन प्राकृतिक गुफाओं को इसलिए चुना क्योंकि वे बारिश,

© StudyIQ Publications

- **विशिष्टताएँ:** 700 ईसवी तक, कई क्षेत्रों में अलग-अलग **भौगोलिक** आयाम एवं उनकी अपनी **भाषा** व **सांस्कृतिक** विशेषताएँ सम्मिलित थीं।
  - ये अलग-अलग शासक राजवंशों से भी जुड़े थे।
  - इन राज्यों के मध्य काफी संघर्ष था।
- **विस्तृत साम्राज्य:** चोल, खिलजी, तुगलक एवं मुगलों जैसे राजवंशों ने अखिल अथवा सम्पूर्ण-क्षेत्रीय साम्राज्य (Pan-India empire) का निर्माण किया जो विभिन्न क्षेत्रों में फैला हुआ था लेकिन ये साम्राज्य समान रूप से सफल नहीं थे।
- **क्षेत्रीय राज्यों का उद्भव:** जब 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य का पतन हुआ, तो इससे क्षेत्रीय राज्यों का पुन: उदय हुआ।
  - वर्षों तक विस्तृत -क्षेत्र पर शासन ने क्षेत्रों के चरित्र में बदलाव किया।
  - सम्पूर्ण उपमहाद्वीप में, इन क्षेत्रों को बड़े व छोटे राज्यों की विरासत के साथ छोड़ दिया गया था जिनके द्वारा उन पर शासन किया था।
  - ये विरासत शासन, अर्थव्यवस्था के प्रबंधन, शाही-संस्कृतियों और भाषा जैसी कई विशिष्ट व साझा परंपराओं के उद्भव में स्पष्ट थीं।
  - 700 और 1750 ईसवीके दौरान, विभिन्न क्षेत्रों ने अपनी विशिष्टता खोए बिना एकीकरण की बड़ी ताकतों के प्रभाव को देखा।
- **भाषा:** कवि अमीर खुसरो के अनुसार, उपमहाद्वीप में विभिन्न भाषाएँ/बोलियाँ मौजूद थीं जैसे अवधी (उत्तर प्रदेश), लाहौरी, कश्मीरी, गुजरी (गुजरात), माश्बारी (तमिलनाडु), इत्यादि।
  - उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि संस्कृत किसी भी क्षेत्र से संबंधित नहीं थी। यह एक प्राचीन भाषा थी और "सामान्य लोग इसे प्रयोग में नहीं लाते, केवल ब्राह्मण इसका प्रयोग करते हैं"।

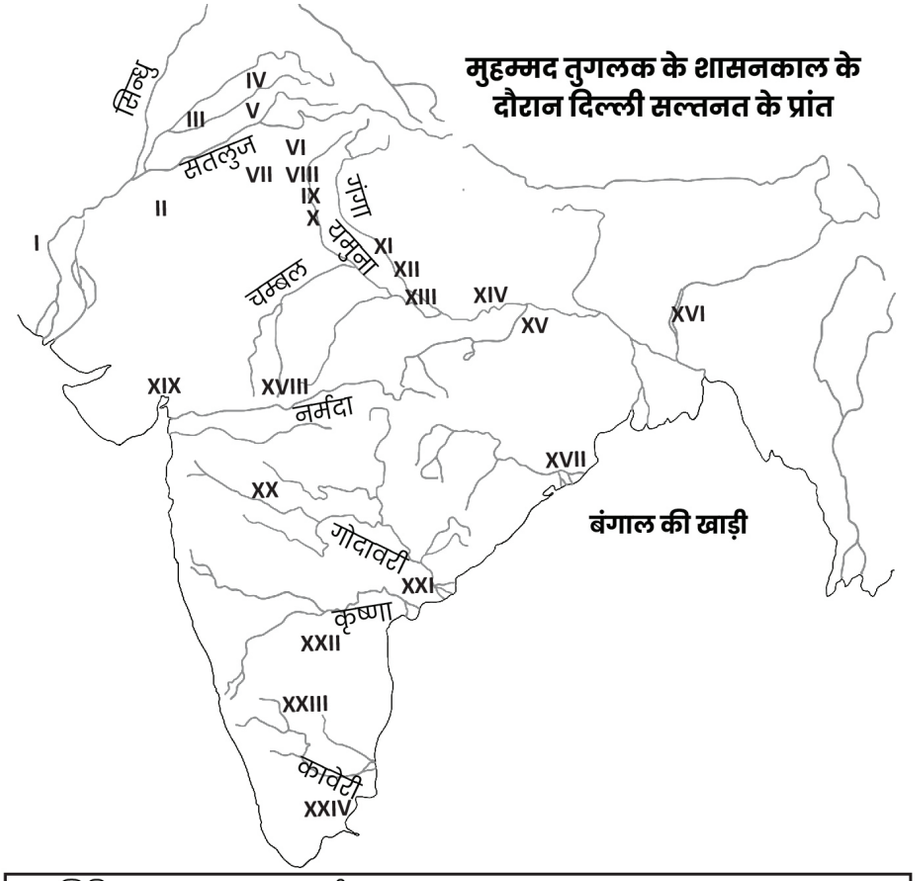

I	सिविस्तान	VII	सरसुती	XIII	कड़ा	XIX	गुजरात
II	उच्छ	VIII	कुहराम	XIV	अवध	XX	देवगिरी
III	मुल्तान	IX	हाँसी	XV	बिहार	XXI	तेलंगाना
IV	कलानौर	X	दिल्ली	XVI	लखनौती	XXII	तैलंग
V	लाहौर	XI	बदायूँ	XVII	जाजनगर	XXIII	द्वारसमुद्र
VI	समाना	XII	कन्नौज	XVIII	मालवा	XXIV	माबार

मिस्र के शिहाबुद्दीन उमरी के मसालिक अल-अबसार फि ममालिक अल-अमसर के अनुसार मुहम्मद तुगलक के शासनकाल के दौरान दिल्ली सल्तनत के प्रांत।

© StudyIQ Publications

करों के प्रकार: करों के तीन प्रकार थे:

- खराज नामक कर खेती पर आरोपित किया जाता था और किसान की उपज का लगभग 50% राशि,
- मवेशियों पर और
- घरों पर।

प्रांतों पर नियंत्रण की कमी: उपमहाद्वीप का बड़ा हिस्सा दिल्ली सुल्तानों के नियंत्रण से बाहर रहा।

- दिल्ली से बंगाल जैसे दूर के प्रांतों को नियंत्रित करना मुश्किल था और दक्षिणी भारत पर आधिपत्य करने के बाद, पूरा क्षेत्र जल्द ही फर से स्वतंत्र हो गया।
- गंगा के मैदान में, ऐसे वन क्षेत्र थे जिन्हें सल्तनत सेनाएँ नहीं भेद सकती थीं, जबकि स्थानीय सरदारों ने इन क्षेत्रों में अपना शासन स्थापित कर लिया था।
- अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक जैसे शासक अल्प समय के लिए ही इन क्षेत्रों में अपना नियंत्रण स्थापित कर सके।

चंगेज खान द्वारा आक्रमण: चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोलों ने 1219 ई में उत्तर-पूर्व ईरान में **ट्रांस-ओक्सियाना** पर आक्रमण किया तथा दिल्ली सल्तनत को गंभीर संकट का सामना करना पड़ा।

- अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक के शासन के दौरान दिल्ली सल्तनत पर मंगोल हमले बढ़ गए।
- परिणामत: दोनों शासकों को दिल्ली में एक बड़ी सेना जुटानी पड़ी, जिसने एक बड़ी प्रशासनिक चुनौती प्रस्तुत की।

पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में सल्तनत

- **सैयद और लोदी:** तुगलक शासकों के पश्चात, सैय्यद और लोदी राजवंशों ने **1526 ई** तक दिल्ली एवं आगरा को राजधानी बनाकर शासन किया।
- **स्वतंत्र शासक:** 16वीं शताब्दी तक, **जौनपुर, बंगाल, मालवा, गुजरात, राजस्थान** और सम्पूर्ण **दक्षिण भारत** में स्वतंत्र शासक थे; जिन्होंने समृद्ध राज्यों और राजधानियों की स्थापना की।
- **नए शासक समूह:** यह वह अवधि भी थी जिसमें **अफगानों और राजपूतों जैसे नए शासक समूहों का उद्भव** हुआ।
- **शेरशाह सूरी (1540-1545):** इन्होंने बिहार में अपने चाचा के अधीन एक छोटे से क्षेत्र के प्रबंधक के रूप में अपना सफर शुरू किया।
  - मुगल शासक हुमायूं (1530-1540, 1555-1556) **को चुनौती दी और** पराजित किया।
  - शेरशाह ने दिल्ली पर आधिपत्य प्राप्त किया।
  - सूर वंश द्वारा 1540 से 1555 ई तक मात्र **15 वर्षों तक शासन किया** गया।
  - सूर राजवंश ने एक ऐसे प्रशासन की शुरुआत की जिसने अलाउद्दीन खिलजी से तत्वों को ग्रहण किया एवं उन्हें अधिक प्रभावी बनाया।
  - शेरशाह की प्रशासन प्रणाली महान सम्राट अकबर (1556-1605) द्वारा अनुसरण की गई।

प्रश्न

प्र. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दिल्ली सल्तनतकाल के दौरान, पहली बार किसी राज्य की राजधानी बनी।

2. फारसी दिल्ली सुल्तानों के शासनकाल में प्रशासन की भाषा थी।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

उत्तर: (b)

प्र. तुगलक प्रशासन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मुक्ती इक्ता भूमि में कानून और व्यवस्था के संचालन हेतु उत्तरदायी थे।

2. मुक्ती स्वयं अपने निर्दिष्ट क्षेत्र से संग्रहीत किए जाने वाले करों की राशि को तय कर सकते थे।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

उत्तर: (a)

© StudyIQ Publications

- **निश्चित वेतन:** अधिकांश श्रमिक उन कारखानों में मजदूर के रूप में कार्यरत थे जिनके मालिक उनका वेतन निर्धारित करते थे। हालाँकि, मजदूरी मूल्य महंगाई में वृद्धि के अनुरूप नहीं बढ़ रही थी।
- **असमानता में वृद्धि:** परिणामस्वरूप, अमीर और गरीब के बीच की खाई चौड़ी हो गई। जब सूखे या ओलावृष्टि के कारण पैदावार कम हो गई, तो हालात बदतर हो गए।
- **निर्वाह संकट:** बढ़ती जनसंख्या, खाद्यान्न की कमी, निश्चित मजदूरी और अमीर और गरीब के बीच बढ़ती असमानता के कारण प्राचीन राजतंत्र के दौरान फ्रांस में यह आम बात थी।
  - परिभाषा: एक चरम स्थिति जहाँ आजीविका के बुनियादी साधन खतरे में पड़ जाते हैं ऐसी स्थिति को निर्वाह संकट के रूप में जाना जाता है।

उभरते मध्यवर्ग

- **बुर्जुआ वर्ग का उदय:** अठारहवीं सदी में मध्यम वर्ग के नाम से जाने जाने वाले सामाजिक समूहों का उदय हुआ।
- **संपत्ति अर्जन:** उन्होंने विदेशी व्यापार के विस्तार और ऊनी और रेशमी वस्त्रों जैसे सामानों के उत्पादन के माध्यम से संपत्ति अर्जित की, जिन्हें या तो विद्वानों के अमीर सदस्यों द्वारा निर्यात या खरीदा जाता था: तीसरे एस्टेट में वकील और सरकारी अधिकारी जैसे पेशेवर शामिल थे।
- **विचारधारा:** ये सभी लोग शिक्षित थे और उनका मानना था कि समाज में किसी भी समूह को जन्म से ही विशेषाधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिए। बल्कि किसी व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा उसकी योग्यता से निर्धारित होनी चाहिए।

दार्शनिकों का उदय

- **जॉन लॉक और ज्याँ जाक रूसो:** स्वतंत्रता, समान नियमों तथा समान अवसरों के विचार पर आधारित समाज की परिकल्पना की
- **टू ट्रीटाइजेज ऑफ गवर्नमेंट:** लॉक ने राजा के दैवीय और निरंकुश अधिकार के सिद्धांत का खंडन करने का प्रयास किया।
- **सामाजिक अनुबंध:** रूसो ने इस अवधारणा का विस्तार किया, लोगों और उनके प्रतिनिधियों के बीच एक सामाजिक अनुबंध के आधार पर सरकार का एक रूप प्रस्तावित किया।
- **द स्पिरिट ऑफ द लॉज:** मोंटेस्क्यू ने सरकारी शक्ति को विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शाखाओं के बीच विभाजित करने का प्रस्ताव रखा।
- **शक्ति पृथक्करण का उदाहरण:** सरकार का यह स्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका में तेरह उपनिवेशों द्वारा ब्रिटेन से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा के बाद लागू किया गया था।
  - व्यक्तिगत अधिकारों की गारंटी के साथ अमेरिकी संविधान ने फ्रांसीसी राजनीतिक विचारकों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा स्त्रोत के रूप में कार्य किया।

क्रांति की शुरुआत

- **कराधान:** प्राचीन राजतंत्र के फ्रांस में,राजा को केवल अपने विवेक से कर लगाने का अधिकार नहीं था।
  - सम्राट को एस्टेट जनरल की एक बैठक बुला कर नए करों के प्रस्तावों की मंजूरी लेनी पड़ती थी।
  - एस्टेट्स जनरल एक राजनीतिक निकाय था जिसमें तीनों एस्टेट्स ने अपने प्रतिनिधि भेजते थे।
  - पर 5 मई 1789,लुई XVI ने नए करों के प्रस्तावों को पारित करने के लिए एस्टेट जनरल की एक सभा बुलाई।
- **एस्टेट जनरल में मतदान:** अतीत में, एस्टेट जनरल में मतदान इस आधार पर किया जाता था कि प्रत्येक एस्टेट में एक वोट होता था। इस बार भी लुई सोलहवें इस प्रथा को जारी रखने पर अड़े रहे।
- **तीसरे एस्टेट की माँग:** हालांकि, तीसरे एस्टेट के सदस्यों ने माँग की कि मतदान सभा द्वारा कराया जाए, जिसमें प्रत्येक सदस्य के पास एक वोट हो।
- राजा ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और तीसरे एस्टेट के सदस्यों ने सभा से बहिर्गमन कर इसका विरोध किया।

तिथि	टिप्पणियाँ
1774	लुई XVI फ्रांस का राजा बन गया और सरकारी खजाना खाली हो चुका है और प्राचीन राजतंत्र के समाज में असंतोष गहराता जा रहा है।
1789	एस्टेट्स जनरल का आह्वान, थर्ड एस्टेट ने नेशनल असेंबली का गठन किया, बास्तील पर हमला किया गया, और ग्रामीण इलाकों में किसान विद्रोह हुए।
1791	राजा की शक्तियों को सीमित करने और सभी मनुष्यों को बुनियादी अधिकारों की गारंटी देने के लिए संविधान बनाया गया।
1792-93	फ्रांस एक गणतंत्र बनता है; राजा का सिर काट दिया जाता है। जैकोबिन गणराज्य का तख्तापलट और फ्रांस पर एक निर्देशिका का शासन।
1804	नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बनता है, यूरोप के विशाल भूभाग पर कब्जा कर लेता है।
1815	वाटरलू में नेपोलियन की हार।

नेशनल असेंबली का गठन

- **20 जून 1789:** तीसरे एस्टेट के प्रतिनिधियों ने खुद को पूरे फ्रांसीसी राष्ट्र की आवाज के रूप में देखा।
  - वे वर्साय के मैदान पर एक इनडोर टेनिस कोर्ट के हॉल में मिले।
- **नेशनल असेंबली:** उन्होंने स्वयं को एक नेशनल असेंबली घोषित किया और शपथ ली कि जब तक सम्राट की शक्तियों को कम